सताव से उस प्रकार निपटें जैसा पौलुस ने किया

जो बच्चों को सिखाते हैं उन्हें अध्ययन पी 3 ब पढ़ना चाहिये

"यदि मैं मनुष्य की रीति पर इफिसुस में वन पशुओं से लड़ा तो मुझे क्या लाभ हुआ? यदि मुर्दे जिलाये नहीं जायेंगे तो आओ खायें पिये, क्योंकि कल तो मर ही जायेंगे"। *(1 कुरिन्थी 15:32)*

प्रार्थना: "प्रिय प्रभु कृपया हमें वही शक्ति बुद्धि धीरज और दया दीजिये जिसे आपने पौलुस को अनुचित सताव से निपटने के लिये दिया था"।

1. **सताव से निपटने के लिये अपने हृदय को परमेश्वर के वचन से तैयार करो।**

नोट: हर एक अपने जीवन में कुछ ना कुछ परेशानियों से होकर गुजरता है विभिन्न प्रकार की यातनाएं हैं: हम क्लेश से पीड़ित होते जब कि उसके योग्य नहीं; हम सज़ा भोगते क्योंकि हमने गलत किया, हम शैतान से शोषण सहते, हम उनके सताव सहते जो हमारे धर्म से घृणा करते हैं।

धार्मिक सताव गैर कानूनी है, पर फिर भी यह होता है। जब हमें अन्याय से सताया जाता है, तो हमें परमेश्वर को पुकार कर अपने सताने वालों के लिये आशीष मांगना चाहिये और हम पर अनुग्रह हो कि हम यीशु के प्रति विश्वास योग्य बने रहें। विश्वासी जो कानून को जानते हैं तो सभी विश्वासी समुदायों में सताव रोकने के लिये शान्ति पूर्ण समाजिक कार्यवाही करना चाहिये।

पढ़िये **मरकुस 8:27-38** यीशु की यातना और उसके सत्य के महत्व को जानने के लिये पढ़ें।

- पता करो कि वास्तव में यीशु कौन था *(पद 27-30 देखें)*
- पता करें कि यीशु पृथ्वी पर क्यों आया *(पद 31-33)*
- ढूंढें कि यीशु अपने अनुयायियों से क्या चाहता कि वे करें *(पद 34-38)*

प्रेरित 8:3 में खोजें, पौलुस ने यीशु से भेंट होने से पहले विश्वासियों के साथ क्या किया।

प्रेरित 9:1-31 में खोजें, कि कैसे परमेश्वर ने शाऊल को विश्वासियों का शिकार करने से बदल कर उनकी सेवा में लगाया।

- शाऊल ने पहले कब जाना कि यीशु जीवित है और सब उसके नियंत्रण में है? *(पद 1-8)*
- शाऊल के लिये परमेश्वर का क्या अभिप्राय था? *(पद 15)*
- परमेश्वर ने क्या कहा कि शाऊल को होगा? *(पद 16)*
- शाऊल ने कैसे यीशु को प्रतिउत्तर दिया? *(पद 17-19)*
- शाऊल ने कहाँ सिखा, पहले 2 स्थानों में कहाँ उसे क्या सामना करना पड़ा? *(प्रेरित 9:20-30)*

प्रेरित 13:49-14:23 में खोजें कि शाऊल (अब पौलुस) को मिशनरी कार्य करते हुए क्या सहना पड़ा।

- यीशु ने कहा कि जब लोग तुम्हारा तिरस्कार करें तो अपने पांव की धूल झाड़ देना (मत्ती 10:14) जब पौलुस और बरनबास ने अन्ताकिया छोड़ा तो लोगों ने उनके विरूद्ध क्या किया? *(प्रेरित 13:50-51)*
- परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिये चेलों को किससे होकर जाना था? *(प्रेरित 14:22)*
- प्रेरित क्यों इकुनियम से भागे? *(प्रेरित 14:1-6)*
- लोग जिन्होंने पौलुस को पत्थरवाह किया क्यों इसे लुस्त्रा से बाहर घसीट ले गये? *(प्रेरित 14:7-20)*

2 कुरिन्थी 11:23-33 में खोजें कितने प्रकार से पौलुस ने यातना सही।

2 तिमुथि 3:10-12 में खोजें सताव किये जाने की किसको आशा होनी चाहिये।

प्रेरित 16:16-34 में खोजें कि क्यों फिलिप्पी के लोगों ने पौलुस और सीलास के साथ दुर्व्यवहार किया।

प्रेरित 17:12 में खोजें सताव के अलावा क्या होता है उसका एक उदाहरण।

1 थिस्सलोनी 1:6-7 में खोजें किस तरह थिस्सलोनी लोगों ने पौलुस और यीशु की नकल की।

1 थिस्सलोनी 2:14-16 में ढूंढें किन प्रकार से उन्होंने यहूदिया की कलीसिया का अनुसरण किया।

1 थिस्सुलोनी 3:2-4 में ढूंढें सताव की यातना के विषय हमें नये विश्वासियों को क्या बताना चाहिये?

रोमियों 8:16-17 में ढूंढें यदि हम मसीह की पीड़ा में भाग लेते हैं तो उनके साथ हम क्या बांटते हैं।

रोमियों 8:28 में ढूंढें जब लोग हमसे दुर्व्यवहार करते तो हम कैसे अपने दिलों में शान्ति पा सकते हैं।

रोमियों 8:33-39 में खोजें यीशु के प्रेम के कारण हम किन चीजों में विजय पा सकते हैं।

मत्ती 5:10-12 में ढूंढें यदि हम सताव सहते तो क्या इनाम पायेंगे।

यूहन्ना 15:18-19 में खोजें जो मसीह पर विश्वास करते हैं क्यों संसार उनसे घृणा करता है।

2. अपने सह कर्मियों के साथ सप्ताह के बीच की गतिविधियों की योजना बनायें।

- सताव का सामना करने के लिये परमेश्वर की सामर्थ के लिये प्रार्थना करें
- सताव के पीड़ितों से भेंटकर उनके साथ प्रार्थना करें, और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का आश्वासन उन्हें दें।
- यदि आपका झुण्ड महत्वपूर्ण गतिविधि सताव के भय से अनदेखी करते हैं, तब अगुवाई के लिये प्रार्थना करें देखें कि पौलुस ने क्या किया जिससे सताव आया (यीशु के पीछे चला, उसका वचन सिखाया, चंगाई की, दुष्ट आत्माओं को निकाला, भक्ती से जीवन बिताया आदि)
- समाचार संस्थाओं से सम्पर्क करें जो सताव के बारे में अंतराष्ट्रीय प्रेस में रिपोर्ट करते हैं।
- सताव से निपटने के लिये अपनी योजना में साथ साथ सहमत हों।

3. अगामी आराधना के लिये अपने सह कर्मियों के साथ योजना बनायें।

ऐसी गतिविधियों का चुनाव करें जो झुण्ड की हाल की आवश्यकताओं और स्थानीय परिस्थितिओं में सही बैठती हैं।

यीशु की पीड़ाओं के सत्य के विषय मरकुस 8:34-38 से समझाओ,

पौलुस की पीड़ाओं के सत्य का वर्णन करो, पढ़िये, याद से बतायें या जो यातनाएं पौलुस ने उठाई उसका नाटक करो।

हमारी पीड़ाओं के सत्य का वर्णन करो।

- जो पद ऊपर दिये गये हैं यदि कोई प्रश्न उठता है तो वार्ता करें।
- वर्णन करें कि कैसे समय समय पर प्रभु दयाकर शान्ति देता है कभी कभी हमारे सतानेवालों को बचाने के द्वारा (प्रेरित 9:1-31) या सरकारी अधिकारियों के लिये हमारी प्रार्थना का प्रतिउत्तर देकर (1 तिमुथी 2:1-2)

बच्चों को जो उन्होंने प्रश्न और नाटक तैयार किया है उन्हें बड़े लोगों के लिये प्रस्तुत करने दें।

विश्वासियों को गवाही देने दें कि उन्होंने अभी हाल ही में कैसे सताव को झेला।

प्रभु भोज का परिचय करने में मरकुस 10:32–44 पढ़ें या याद से कहानी बतायें उस मृत्यु के प्याले के विषय जो यीशु ने कहा कि जो हमें और उसको पीना है। बतायें कि प्रभु भोज हमें पाप के लिये मृतक समझने में हमारी सहायता करता है, मसीह के साथ आत्मिक रूप से उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान में शामिल होकर।

दो या तीन के **छोटे झुण्ड** में प्रार्थना करें सताव से निपटने के लिये योजना की पुष्टि करना और एक दूसरे को प्रोत्साहित करके।

2 तिमुथी 3:12 **कंठस्त करें।**